RUSSIA WORKSHOP – JULY 2019

Kabīr session 4 (if it happens)
Misc. poems including some that are fun and some that are long & hard

J = number in Jaipur manuscript, 1615-21
S = Jaipur ms number as given in Callewaert's *Millennium Kabir*, followed by # = *Millennium* poem number

J 32 - S32#40

कथता बक्ता सुर्ता सोई ॥ आप बिचारै सो ग्यांनी होई ।टेक॥
जैसें अगनि पवन का मेल ॥ चंचल चपल बुधि का षेल ॥१॥
नौ दरवाजा दसवां द्वार ॥ बूझि रे ग्यांनी ग्यांन बिचार ॥२।
देही माटी बोलै पवनां ॥ कहि धूं पंडित मुवा स कौंणां[1] ॥३।
मुई सुरति बाद अहंकार ॥ सो[2] न मुवां जो बोलनहारं[3] ।४
जा कारंणि तटि[4] तीरथि जांहि ॥ रतन पदारथ घटही मांहि ॥५॥
पठि पठि पंडित बेद बषांणें । भीतरि हूती बस्त न जांनै ॥६॥
हूं न मुवा मेरी मुई बलाइ ॥ सो न मुवां सो[5] रह्या समाइ ॥७।
कहै कबीर गुरि ब्रह्म दिषाय़ा ॥ मरता जाता नजरि न आय़ा ॥८॥३२॥

J11 - S11#15

ऐक अंचा[6] देष्या रे भाई ॥ ठाढा स्यंघ चरावै गाई ॥टेक॥
पहलैं[7] पूत पछैं[8] भई माई ॥ चेला कै गुर लागै पाई ॥१॥
जल की मछली तरवरि व्याई ॥ पकडि बिलईय़ा मुरगै षाई ॥२॥[9]
तलि करि साषा उपरि करि मूल ॥ बहुत भांति जड़ लागे फूल ॥३॥
कहै कबीर य़ा पद कूं बूझै ॥ ता कूं तीन्यूं त्रीभुवन सूझै ॥४॥११॥

---

[1] Gop105;13, *KG* (Gupta) बूझि रे ज्ञानी मुवा स कवनां.

[2] Gop105;13, *KG* (Gupta) वहु.

[3] A41 कहनेहार

[4] Gop105;13 तप.

[5] Gop105;13 जे, *KG* (Gupta) जो.

[6] MS3190 reads only अंचा, the scribe having by mistake omitted the letter भ. S11 in *MKV*, p. 133, has the corrected form अंचभा, reading common to all other Rājasthānī MSS included in that edition.

[7] Variants: C14 पैहलै, Raj72;15 आगैं.

[8] V65 पाछैं, C14 पाछै, Raj72;15 पीछै.

[9] C14 inserts the following verse: बैलहि डारि गुनि घरि अई । कुता कौं ले गई बिलाई॥

J39 – S39#47

रांम मोहि तारि कहां लै जैहौ ॥
सो बैंकुंठ कहौ है कैसा ॥ करि पसाव़ मोहि देहौ ॥टेक॥
जे मेरे जिय़ दोइ जांणत हौ[10] ॥ तौ मोहि मुंक्ति बताव़ो ॥
ऐकमेक ह्वै रह्या सबनि मैं ॥ तौ काहे भ्रमाव़ो ॥१॥
तारंण तिरंण जबै लग कहिय़े ॥ तब लग तत न जांणां ॥
ऐक रांम देष्या सबहिन[11] मैं ॥ कहि कबीर मन मांना॥२॥३९॥

J30 – S30#37

सो कछु बिचारहु पंडित लोई ॥ जा कै रूप न रेष बरंण नहीं कोई ॥टेक॥
उपजें[12] पिंड प्रांण कहां थैं आवै ॥ मुवां[13] जीव़ जाइ कहां समावै ॥१॥
इंद्री कहां करहि[14] अंसमांनां[15] ॥ सो कत गय़ा यु[16] कहता[17] रांमां ॥२॥
पंच तत जहां[18] सबद न स्वादं ॥ अलेष[19] निरंजन तहां[20] बिद्या न बादं ॥३॥
कहै कबीर मन मनहि[21] समांनां तब आंगम निगंम झूठ[22] करि[23] जांनां

J19 – S19#24

अब[24] घटि प्रगट भये़ रांम राई ॥ सोधि सरीर कनक की[25] नांई ॥टेक॥
कनक कसौटी जैसैं कसैं [26] सुनारा ॥ सोधि सरीर भय़ा तन[27] सारा ॥१॥[28]
उपजत उपजत बहुत उपाई ॥ मन थिर भय़ा तबैं थिति पाई ॥२॥[29]
बाहरि षोजत जनंम गमाय़ा ॥ उनमंनी ध्यांन घट भीतरि पाय़ा ॥३॥[30]
बिन परचै तन काच कथीरा ॥ परचै कंचन भय़ा कबीरा ॥४॥१९॥

---

[10] All Rājasthānī MSS published in the *MKV* have this reading. AG1104;5 (and also M47) read जउ (जे) तुम्ह (तुम) मो कउ दूरि करत हउ ("If You keep me far away from You"), unproblematic from the point of view of grammar and meaning. Gupta, *KG*, p. 177, prefers the Rājasthānī version as fitting better in the context and explains the word दोइ as अपने से भिन्न.

[11] MS3190/S39 and Gop75;23 सबहिन; A50 सवहिंन; V40 सबनि.

[12] A39, V32, C26, Gop47;22 उपजै

[13] A39, V32, C26, Gop47;22 मुवा

[14] V32 करौ

[15] Gop47;22, *KG* (Gupta) करहिं बिस्रामां

[16] A39, V32, C26, Gop47;22 जु *KG* (Gupta) जो

[17] A39 कहतौ, V32 कहतां, C26 कहते

[18] V32 तहां

[19] A39, V32, C26 अलष

[20] A39, Gop47;22 जहां *KG* (Gupta) तहां missing

[21] A39 मनहिं

[22] *KG* (Gupta) झूठि

[23] V32 सबै हंम instead of झूठ/झूठि करि

[24] V14 इंब.

[25] J96 and C7 की सी.

[26] A21, V14 कसि ले, J96 कसें, C7 कसै, *KG* (Gupta) कसि लेइ.

[27] J96 and C7 तत.

[28] In J96 and C7 this is verse 3.

[29] In J96 and C7 this is verse 1.

[30] In J96 and C7 this is verse 2.

J71 - S72#95

बोलणां का कहिय़े रे भाई ॥ बोलत बोलत तत नसाई ॥टेक॥

बोलत बोलत बढै बिकारा ॥ बिन बोल्यां क्यूं होइ बिचारा ॥१॥

साधू स्यूं बोल्यां[31] हतकारी॥ मूरिष स्यूं बोल्यां झष मारी ॥२॥

सतं मिलै कछु कहिय़े कहिय़े ॥ मिलै असंत मुष्टि करि रहिय़े॥३॥

कहै कबीर आधा घट डोलै ॥ भर्या[32] होइ तौ मुषां न बोलै[33]॥४॥७१॥

[prepare only to here]

* * * * *

[FYI a long hard one! who wants to help LH work on translation?]

J5 - S5#5

गोकल नाइक बीठला ॥ मेरौ मन लागौ तोहि रे ॥

बहुतक दिन बिछुरें भऐ ॥ तेरी औसेर आवै मोहि रे ॥टेक॥

क्रंम कोटि कौ ग्रेह रच्यौ रे ॥ नेह गऐ की आस ॥

आपही[34] आप बंधाईय़ा ॥ दोइ लोचन मरै पिय़ास रे ॥१॥

नां कतहूं चलि जाइय़े रे ॥ ना सिरि लीजै भार ॥

रसनां रस ही[35] बिचारिय़े ॥ सारंग श्रीरंग धार रे ॥२॥

आपा पर संमि[36] चीन्हिय़ै रे ॥ दीसै सर्ब संमान ॥

इहि पदि नरहरि भेटिय़े रे ॥ तूं छाडि कपट अभिमांन रे ॥३॥[37]

साधैं सिधि अैसी पाइय़ै रे ॥ क्यंबा होइ म होइ[38] ॥

जे दिढ ग्यांन न उपजै ॥ तौ हहटि[39] रहै जिनि कोइ रे ॥४॥

ऐक जुगति ऐकै मिलै ॥ क्यंबा जोग कि भोग ॥

इन दून्यूं फल पाईय़ै ॥ रांम नांम सिधि[40] जोग रे ॥५॥

---

[31] बोल्यां, instr. sg. of verbal noun in *-ā*, here best understood in its original sense "by talking","(by) having talked", "by talk". A80 बोल्या; V53 बोल्यां; J117 बोले; Raj95;4 बोलें and बोल्यां; AG870;1 बोले. हितकारी is perhaps related as attribute to बिचारा in the preceding verse. SĪHA, *KV-S*, p. 252 (*pad* no. 200), reads ज्ञानी सौं बोलें उपकारी मूरिख सौं बोलें झखमारी.

[32] भरया, only in *MKV*, S72, is a printing error; MS3190 and all other MSS (A80, V53, J117, Gop50;11 and Raj95;4) read भर्या.

[33] *Bījak*, ed. by V. ŚĀSTRĪ, p. 85, *ramainī* 70, reads पूरा होय बिचार ले बोलै – "when full, speaks with consideration" (lit. "having taken consideration"). Cf. identical locution in the *MKV pad* 477.0 (p. 100 in the present anthology).

[34] A5, V5 आपहि; KG/NPS आपहिं;J90 आपे; C4 आपै.

[35] MS3191/S5, C4 रस ही ; A5, V5, J90, KG/NPS रसहि.

[36] A5 सभि; V5 जब; J90, C4 समि.

[37] KG/NPS switches the sequence of verses 2 and 3.

[38] A5, V5, C4 क्यंबा होइ महोइ; J90 किबा होइ महोइ (thus segmented in *MKV*, 121–122). म can be interpreted as negative particle (*MHK* IV, 252) and the phrase as meaning approximately „come what may“ (equivalent to MSH हो न हो), or „it cannot be otherwise“ (corresponding to the meaning of MSH हो न हो, which has been explained as आवश्यक । निश्चय । जरूर । निस्संदेह । (HŚS, vol. 11, p. 5562).

[39] A5, V5, KG/NPS अहटि, which appears to be the correct spelling; J90 ओहटि; C4 औहुटि. According to *MHK* I, 232, 235 अहटना = अहुटना ... १ अलग, पृथक् या दूर होना २ पीछे हटना ।

प्रेम भगति अैसैं कीजिय़े रे ॥ मुषि अंम्रित बरिषै चंद ॥
आपहीं आप बिचारिय़े ॥ तब केता होइ अंनंद रे ॥६॥
तुम्ह जिनि जांनौ गीत[41] है रे ॥ य़हु निज व्रह्म बिचार ॥
केवल कहि समझाईय़ा[42] ॥ आतम साधन सारे[43] रे ॥७॥[44]
चरण कव़ल चित लाईय़ा[45] रे ॥ रांम नाम गुन गाइ ॥
कहै कबीर सासौ[46] नही ॥ भगति मुकंति गति पाइ[47] रे ॥८॥५॥

---

[40] MS3191/S5, KG/NPS, V5 सिधि; A5, J90, C4 सिध.

[41] J90 जुगति.

[42] MS3190/S5, C4 समझाईया; A5, V5, J90, KG/NPS समझाइया.

[43] सारे is scribal mistake (anticipation of the following syllable), found only in MS3190-S5. A5, V5, J90, C4, KG/NPS correctly सार.

[44] J90, C4 switch the sequence of verses 6 and 7.

[45] A5, J90, C4 लाइये; V5 लाइए.

[46] A5 संसौ; V5, J90, C4 संसा.

[47] C4 पाई.